डगर है मुश्किल कठिन सफर है,
मगर मुसाफिर जगा नहीं है,
जो सोएगा बस वही खोएगा,
जो सोएगा बस वही खोएगा,
ये बात उसको पता नहीं है,
डगर हैं मुश्किल कठिन सफर हैं,
मगर मुसाफिर जगा नहीं है।।

तर्ज तुम्हारी नज़रों में हमने।

लगेंगे फल जब किसी वृक्ष में,
वो पेड़ झुक जाएंगे स्वत: ही,
अकड़ तने की बता रही है,
अकड़ तने की बता रही है,
अभी फल इसमें लगा नहीं है,
डगर हैं मुश्किल कठिन सफर हैं,
मगर मुसाफिर जगा नहीं है।।

जो खानदानी रईस होते,
मिजाज रखते है नर्म अपना,
तुम्हारा लहजा बता रहा है,
तुम्हारा लहजा बता रहा है,
तुम्हारी दौलत नई नई है,
डगर हैं मुश्किल कठिन सफर हैं,
मगर मुसाफिर जगा नहीं है।।

जरा सा कुदरत ने क्या नवाजा,
की आके बैठे हो पहली शफ में,
अभी से उड़ने लगे हवा में,
अभी से उड़ने लगे हवा में,
अभी ये शोहरत नई नई है,
Bhajan Diary Lyrics,
डगर हैं मुश्किल कठिन सफर हैं,
मगर मुसाफिर जगा नहीं है।।

डगर है मुश्किल कठिन सफर है,
मगर मुसाफिर जगा नहीं है,
जो सोएगा बस वही खोएगा,
जो सोएगा बस वही खोएगा,
ये बात उसको पता नहीं है,
डगर हैं मुश्किल कठिन सफर हैं,
मगर मुसाफिर जगा नहीं है।।

स्वर श्री देवेन्द्र जी महाराज।

Source: https://www.bharattemples.com/dagar-hai-mushkil-kathin-safar-hai/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App

https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw